17 फरवरी 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दीक्षान्त समारोह संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महावीर विद्या निकेतन का दसवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 4 फरवरी को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. सुदीप कुमार जैन (लालबहादुर शास्त्री विश्वविद्यालय, दिल्ली) एवं ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर द्वारा तीनों समय समयसार व प्रवचनसार के आधार से व्याख्यानों का लाभ मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री ने की। ट्रस्ट का परिचय एवं गतिविधियों की जानकारी मंत्री अशोकजी जैन ने दी। समारोह में कक्षा 10वीं के छात्रों ने अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाये। समागत प्रमुख अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर विद्या निकेतन के टॉप 10, टॉप 5 एवं टॉप 3 विद्यार्थियों की घोषणा की गई। आदर्श विद्यार्थी के रूप में अमोल जैन छिन्दवाड़ा एवं उपादर्श विद्यार्थी के रूप में अक्षत जैन सिहोरा का चयन किया गया, जिन्हें पण्डित विपिनजी शास्त्री व उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रमाण-पत्र, ट्रॉफी एवं स्वर्णचेन व लॉकेट दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री ने किया। निर्देशक डॉ. राकेशजी शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की, विद्या निकेतन को नवीन ऊँचाईयों तक ले जाने का संकल्प व्यक्त किया तथा समस्त साधर्मियों व विशिष्ट अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

हार्दिक बधाई!

राजस्थान सरकार द्वारा राजकीय महाविद्यालयों हेतु आयोजित संस्कृत प्रतियोगिताएं जवाहरकला केन्द्र, जयपुर में संपन्न हुई, जिसमें श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपाध्याय वरिष्ठ के छात्र पल त्रिवेदी ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान एवं संयम जैन गुढाचन्द्रजी ने निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को राशि, प्रमाण-पत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी -

श्री नगेन्द्रजी पाटनी को श्रद्धांजलि

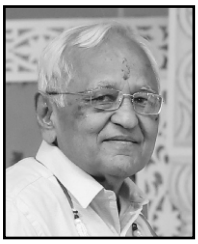

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री नगेन्द्रकुमारजी पाटनी का दिनांक 23 जनवरी को देहावसान हो गया है, इस अवसर पर ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 फरवरी को श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, जयपुर ने की। सभा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री अनन्तजी पाटनी आगरा, श्री संदीपजी पाटनी आगरा, श्रीमती इन्द्रादेवी बज कोटा, श्रीमती चांदरानी जैन आगरा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अनन्त पाटनी एवं श्रीमती इन्द्रादेवी बज ने अपने विचार व्यक्त किये।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

JAANA का वार्षिक कार्यक्रम

JAIN ADHYATMA ACADEMY OF NOPRTH AMERICA (JAANA) के तत्त्वावधान में 18वाँ वार्षिक शिविर दिनांक 29 जून से 4 जुलाई, तक टोरंटो-ब्रैम्पटन (कनाडा) में संपन्न होने जा रहा है।

विद्वत्समागम - डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर।

निवेदक - ब्रैम्पटन (कनाडा) जैन मन्दिर।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 4

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

हम जिन-दर्शन, पूजन, भक्ति की महिमा परक स्तुतियाँ प्रतिदिन पढ़ते हैं, परन्तु हमें पता नहीं हम क्या-क्या पढ़ जाते हैं? उनका क्या अर्थ है? यदि हम उनके अर्थ पर, अभिप्राय पर ध्यान दें तो जिनदर्शन की महिमा से महिमावंत हुए बिना नहीं रह सकेंगे। दर्शन पाठ ही देखिये –

''दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्ष साधनं।।''

अर्थात् देवाधिदेव सर्वज्ञ परमात्मा के दर्शन सर्व पापों के नाश करने वाले हैं, देव दर्शन स्वर्ग की सीढ़ी है, और तो क्या देवदर्शन साक्षात् मोक्ष का साधन है। और भी –

''विघ्नौद्या प्रलयं यान्ति, स्तूयमाने जिनेश्वरे''

अर्थात् जिनेश्वर परमात्मा के स्तवन करने से सम्पूर्ण विघ्न समूह का नाश होता है।

कविवर दौलतरामजी तो लिखते हैं – 'जय परम शान्त मुद्रा समेत भविजन को निज अनुभूति हेतु' अर्थात् वीतरागी भगवान की परम शान्त मुद्रा भव्य जीवों के लिए आत्मानुभूति में निमित्त होती है। एक पद में भी पं. जी ने जिन दर्शन की यथार्थ महिमा दर्शाई है –

''निरखत जिन चन्द्र वदन, स्वपद सुरुचि आई। प्रगटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की, कला उदोत होत काम जामिनी पलाई।।निरखत. ।।''

हे भगवन! आपके मुखरूपी चन्द्र के निरखते ही मुझे अपनी रुचि उत्पन्न हो गई, अपने पराये का भेदज्ञान उत्पन्न हो गया, ज्ञानरूपी सूर्य प्रगट हो गया तथा मोहरूपी अंधकारमयी रात्रि नष्ट हो गई। ऐसे एक नहीं अनेक ज्ञानियों ने अपने अंतरंग में दर्शन की फलानुभूति करके अपने उद्‌गार प्रस्फुटित किये हैं.... देखिये सोलह कारण पूजा की जयमाला –

''जो अरहंत भक्ति मन आने, सो जन विषय कषाय न जाने''

अर्थात् जो अरहंत की भक्ति को मन में धारण करेगा उसके मन में विषय कषायों की उत्पत्ति ही नहीं होगी। परन्तु आज तक हमने सच्चे देव के स्वरूप पर ध्यान नहीं दिया। यही कारण है कि हम अनादि से अपने स्वरूप को भूले हुए हैं। जिन दर्शन का फल निज दर्शन है।

प्रथमानुयोग शास्त्र में एक कथा आती है – एक गढ़रिया था, जो जंगल से एक शेर के बच्चे को पकड़ लाया और वह शेर का बच्चा गड़रिया की भेड़-बकरियों के साथ रहता हुआ अपनी शक्ति व स्वभाव को भूल गया, वह स्वयं को भेड़ की ही जाति का समझता। एकबार प्यास से व्याकुल वह शेर का बच्चा सरोवर के किनारे पहुँचा। वहाँ शांत, स्थिर व निर्मल जल में जब उसने अपना प्रतिबिम्ब देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गया। वह अपने सब साथियों से भिन्न था, इतने में ही पहाड़ी पर से एक सिंहनी ने उसे देखा, अपनी जाति के बालक को भेड़ों में देखकर उसने गर्जना की, शेरनी की गर्जना को सुनकर सिंह बालक ने जब उधर देखा और अनुभव किया कि मैं तो उसकी जाति का हूँ, अरे, मैं यहाँ कहाँ फँसा हूँ! बस, फिर क्या था? अन्दर का सिंहत्व जागा, और वह एक क्षण में छलांग लगाकर अपनी जाति में जा मिला।

काश! हम भी उस शेर के बच्चे की तरह अरहंत परमात्मा के स्वरूप को देखकर, पहचान कर, उनकी दिव्य ध्वनि की गर्जना सुनकर अपनी भूली हुई शक्ति को पहचान लें तो एक क्षण में परमात्मा की (अपनी ही) जाति में शामिल हो सकते हैं।

जिन प्रतिमा के स्वरूप का सार्थक शब्द चित्र प्रस्तुत करते हुए कविवर भूधरदासजी कहते हैं –

करनो कछु न करतैं[१] कारज, तातैं पाणि[२] प्रलम्ब[३] करे हैं।
रहयो न कछु पायन तैं पैवो,[४] ताही तैं पद नाहिं टरै हैं।।
निरख चुके नैननि सब यातें, नेत्र नासिका अनी[५] धरै हैं।
कहा सुनै कानन[६] यों कानन,[७] जोगलीन जिनराज भये हैं।।

उपर्युक्त छन्द में वीतरागविज्ञान मयी ध्यानमग्न, निश्चल, वीतरागभाव वाही, परमशान्त मुद्रा का सुन्दर साकार शब्दांकन होने से पाठक जिनदर्शन की महिमा से भी महिमावंत हुए बिना नहीं रहता।

छन्द में कहा गया है कि जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के हाथ जो प्रलम्बित हैं, वे इस बात के प्रतीक हैं कि स्वतः परिणमित परद्रव्यों में इन हाथों से कुछ करना ही नहीं है। अज्ञानवश अब तक

१. हाथों से २. हाथ ३. लटकाना ४. चलना
५. नासाग्र ६. कर्ण इन्द्रिय ७. वन

जो पर में कर्तृत्व स्थापित कर रखा था वह बात यथार्थ नहीं है।

''सत्ता में आने पर मैं दुनियां का नक्शा बदल दूँगा''आदि मान्यता महाअज्ञान है - ऐसा विचारकर ही मानों जिनराज दोनों हाथ लटकाकर खड़े हैं और जगत को अपनी अचल खड़े आसन द्वारा मौन उपदेश दे रहे हैं कि यदि तुम्हें सुखी होना हो परमात्म दशा प्रगट करना हो, पुनः संसार में ८४ लाख योनियों में जन्म-मरण नहीं करना हो, संसार दुःखरूप लगा हो तो हमारी तरह तुम भी हाथ डाल दो या हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाओ अर्थात् पर में कर्तृत्त्व का अहंकार करना छोड़ दो। ''मैं पर का कुछ भला-बुरा कर सकता हूँ।'' - यह मान्यता तज दो।

इसीप्रकार इन पैरों से भी सुख की तलाश में खूब भटका।

चारों ओर सुख शान्ति की तलाश में खूब भाग-दौड़ की, किन्तु कहीं भी सुख हाथ नहीं आया और जब अन्तर में झाँककर देखा तो ''अनन्त सुख शान्ति का सागर तो आप ही है'' इसे पाने के लिए कहीं जाना नहीं है, कहीं से आना नहीं है - ऐसा विचारकर ही मानों भगवान जिनराज अचल हो गये हैं, चलना-फिरना छोड़ दिया है।

निश्चल भाव से अचलवत् स्थिर आपके चरण युगल इस बात को दर्शाते हैं कि दौड़ धूप करना व्यर्थ है। पावों से भाग दौड़ द्वारा कहीं कुछ प्राप्त करने लायक है ही नहीं। आत्मा तो स्वयं अपने में ही परिपूर्ण हैं - इसी बात का सन्देश देने के लिए ही मानो जिनराज अचल हो गये हैं।

तथा नेत्रों को नासाग्र इसलिए किया है कि अब अतीन्द्रियज्ञान एवं आनन्द की उपलब्धि हो गई है। अब इन इन्द्रियों का क्या काम? दूसरी बात यह भी तो है कि ये नेत्र (चर्मचक्षु) जड़ पुद्गल को ही तो जानते हैं, जान सकते हैं। मैं तो अरस, अरूपी, अमूर्तिक महा पदार्थ हूँ - जो नेत्रों द्वारा गम्य नहीं है, एतदर्थ अब इन नेत्रों से कुछ भी प्रयोजन नहीं है। और कानों से भी क्या सुनना बाकी रहा, अतः कर्णेन्द्रिय का भी अवलम्बन तोड़कर जिनराज आत्म साधना हेतु ध्यानस्थ हो गये हैं।

जिनेन्द्र दर्शन करते हुए आत्मार्थीजन इसप्रकार चिन्तवन करते हुए देव दर्शन करें तो ही जिनदर्शन का यथार्थ लाभ हो सकता है।

देव दर्शन के संदर्भ 'देव' शब्द से मुख्यतया पंचपरमेष्ठी का ग्रहण किया गया है यद्यपि इस क्षेत्र व काल में अरहंत परमात्मा के साक्षात् दर्शन का सुयोग नहीं है, तथापि उनकी आदर्श रूप जिन प्रतिमा के दर्शन का सुयोग तो है ही। उनकी आदर्श रूप जिन प्रतिमा का लाभ भी साक्षात् अरहन्तवत् ही है, कहा भी है-

''जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही जिनागम मांहि।''

- बनारसीदास

दूसरी बात यह भी तो है कि समवसरण में अरहंत के साक्षात् दर्शन करने वाले भी तो इन चर्म चक्षुओं से परमौदारिक शरीर को ही तो देखते हैं। उनकी आत्मा का तो वहाँ भी दर्शन संभव नहीं है। मूर्तिक पदार्थों का ज्ञान करने वाले नेत्र अमूर्तिक आत्मा को कैसे देख सकते हैं?

हाँ, अरहंत परमात्मा की परम शान्त मुद्रायुक्त जिन प्रतिमा ही भव्य जीवों के लिए आत्मानुभूति में निमित्त कारण हो सकती है अतएव हमें नियमित देव-दर्शन करना आवश्यक है।

यहाँ 'दर्शन' शब्द का अर्थ भी मात्र देखना या सामान्य अवलोकन नहीं है। इस देव-दर्शन के प्रकरण में दर्शन शब्द भी अपने एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। दर्शन शब्द में स्तुति, वंदना, अर्चन एवं मनन-चिन्तन आदि गर्भित हैं। मात्र मूर्ति का अवलोकन कर लेने से देव-दर्शन की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो जाती। मूर्ति तो मात्र निमित्त है, मूर्ति के माध्यम से परमात्मा के गुणों का स्मरण करके अपने निजस्वरूप को पहचानना, आत्मावलोकन करना देव-दर्शन का मुख्य प्रयोजन है।

(क्रमशः)

जैन साहित्य एवं प्राकृत भाषा पर परिचर्चा

नई दिल्ली : यहाँ प्रगति मैदान में दिनांक 13 जनवरी को आयोजित विश्व पुस्तक मेले (हॉल नं. 12 ए, स्टॉल नं. 190) में जैन साहित्य एवं प्राकृत भाषा पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने जैन साहित्य की व्यापकता पर प्रकाश डाला। साथ ही डॉ. अनेकान्तकुमार जैन ने प्राकृत भाषा का महत्व प्रतिपादित किया।

सभा का शुभारम्भ डॉ. इन्दु जैन ने प्राकृत अपभ्रंश भाषा में मंगलाचरण करके किया। कार्यक्रम में अनेक विद्वानों एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के जैनदर्शन के अनेक शोधार्थियों व छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

परिचर्चा का संचालन एवं संयोजन डॉ.अनेकान्तकुमार जैन ने किया।

परद्रव्य कोई जबरन् तो बिगाड़ता नहीं है, अपने भाव बिगड़ें, तब वह भी बाह्य निमित्त है। तथा इसके निमित्त बिना भी भाव बिगड़ते हैं, इसलिये नियमरूप से निमित्त भी नहीं है। इसप्रकार परद्रव्य का तो दोष देखना मिथ्याभाव है, रागादि भाव ही बुरे हैं...

- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 244

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (11)

परम आनंदमय संयमित जीवन ही हमें कष्टकर प्रतीत होता है, तब संयम धारण कैसे करें?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

हालांकि हम मोक्ष से परिचित नहीं हैं, हम मोक्षसुख और उसके स्वरूप को भी नहीं पहिचानते हैं, यदि हमारे समक्ष मोक्षसुख के स्वरूप का वर्णन किया जाये तो कदाचित् हमें वह सुख सा ही न लगे, तथापि हम मोक्ष पाने के लिये तैयार भी हो जाएं तब भी इतिश्री नहीं होती है। अब हमारे सामने एक और बड़ी चुनौती आकर उपस्थित हो जाती है – मोक्षमार्ग की साधना की, मोक्षमार्ग पर चलने की, संयम धारण करने की, व्रत धारण करने की।

वस्तुत: तो मात्र मोक्ष ही नहीं वरन् मोक्षमार्ग भी, मोक्ष की साधना भी, संयमित जीवन भी अनन्त आनन्दमय होता है; पर बलिहारी हमारे अज्ञान की कि हमें संयमित जीवन अत्यंत कष्टकर प्रतीत होता है और हम संयम के मार्ग पर चलने से बचते हैं।

स्वच्छंद आचरण में तथा विषय–भोगों में सुख मानने वाले सामान्यजनों को तो संयमित जीवन कष्टकर प्रतीत होता ही है; पर कतिपय संयमधारीजन भी जब यह कहते पाये जाते हैं कि ''संयम धारण करो तो पता चले'' अथवा ''एक दिन खाना न मिले तो नानी याद आ जायेगी, तब पता चलेगा कि उपवास कैसे होता है'' तब हमारी यह धारणा और दृढ हो जाती है कि वास्तव में संयमित जीवन बड़ा ही कष्टकर होता होगा। ऐसे हालात में ''आज नकद, कल उधार'' के सिद्धांत में भरोसा रखने वाले हम लोग भविष्य के संभावित **(संदिग्ध भी)** सुख के लिये वर्तमान में **(हमारी मान्यता में)** प्रकट दु:खरूप संयम धारण करने के लिये कैसे तैयार हो सकते हैं?

दरअसल देखा यह गया है कि ऐसे लोग जिन्होंने संयमित जीवन स्वीकार किया है, उनके जीवन में भी दो समानांतर धाराएं एक साथ चलती हैं। एक ओर तो उन्होंने अपने कुल संस्कारवश, गुरुओं की प्रेरणा और आज्ञा पाकर तथा ग्रंथों का अध्ययन करके अपने लिये संयम का मार्ग चुन लिया है, पर दूसरी ओर अभी भी उनके अभिप्राय में इष्ट संयोगों तथा भोगों में सुख तथा प्रतिकूल अनिष्ट संयोगों और भोगसामग्री के अभाव में दु:ख की मान्यता गहराई से जड़ें जमाये हुये है; उनका यही अभिप्राय उनके वक्तव्यों में निरंतर व्यक्त होता रहता है। **वे जब भी संयम की चर्चा करते हैं तो तद्जनित कष्टों, अभावों और प्रतिकूलताओं की ही चर्चा करते हैं। उनके चित्त में जब जनसामान्य के प्रति करुणा उत्पन्न होती है तो उनका उपकार करने के उद्देश्य से दिये गये उनके उपदेशों में प्रतिकूल अनिष्ट संयोग दूर करने और अधिकतम अनुकूल इष्ट संयोग जुटाने के उपायों पर ही जोर दिया जाता है। वे समाज को जनकल्याण के लिये स्कूल–कॉलेज और अस्पताल–धर्मशालाएं आदि खोलने की प्रेरणा देते हुए देखे जाते हैं, लौकिक शिक्षा के अन्य साधन जुटाने तथा धंधे–व्यापार स्थापित करने में सहायक शिक्षा और आर्थिक साधन जुटाने के प्रयासों में व्यस्त दिखाई देते हैं। और तो और सास–बहू, पिता–पुत्र और भाई–भाई के रिश्तों की चर्चा करते हुए सभी मिलकर किस प्रकार प्रेम से रहें – ऐसे उपायों की शिक्षा देते हुए पाये जाते हैं।**

क्या यह ऐसा ही नहीं है कि कोई किसी को 100 पाडों (नर भैंसे) में से कुछ पाडियां (मादा भैंस) छांटने का उपाय बतलाये? अरे जब वहाँ मादा भैंसे हैं ही नहीं तो मिलेंगी कैसे? **इसी प्रकार संसार में, संयोगों में और भोगों में सुख है ही नहीं तो मिलेगा कैसे?** फिर ऐसा अनर्थकारी व्यर्थ उपदेश क्यों? जब आपको इन सबमें ही सुख दिखाई देता है और संयमित जीवन कष्टकर प्रतीत होता है तो आपने संसार त्यागा ही क्यों?

संयम धारण ही क्यों किया?

क्या कष्ट भोगने के लिये?

यदि आपको सचमुच सांसारिक संयोगों और भोगों में दु:ख और उनके त्याग में संयम दिखाई देता है तो संसार के पीड़ित जनसामान्य को भी दृढतापूर्वक उसी मार्ग पर चलकर सुखी होने का उपदेश क्यों नहीं देते? संसार में सुख की कल्पना ही व्यर्थ है – ऐसा उपदेश क्यों नहीं देते?

करुणा करके ही सही, उन्हें संसार में ही उलझाए रखने के साधन जुटाने के प्रयास क्यों करते हैं?

यदि संयमधारीजन ही ऐसा करेंगे तो फिर जनसामान्य को उनके कल्याण का मार्ग कौन बतलायेगा? यदि अभी इस मानव जीवन में नहीं तो कब बतलायेगा?

आज यदि यह मानव जीवन, जैनधर्म और अन्य सभी अनुकूलताएं पाकर भी यह जीव अपने इस कल्याण के मार्ग पर लगने से वंचित रह जायेगा तो फिर कब यह इस मार्ग पर आयेगा?

अरे ! क्या भोग भोगने के लिये भी इस जीव को कभी किसी के उपदेश, ट्रेनिंग या प्रेरणा की आवश्यकता पड़ी है? इस ओर तो इस संसारी जीव की सहज प्रवृत्ति है? इसके साधन तो वह स्वत: ही जुटा लेगा; तथापि ऐसी प्रेरणा, उपदेश और शिक्षा (ट्रेनिंग) देने वालों की कोई कमी भी नहीं है, कदम–कदम पर एक ढूंढो, हजारों ऐसे मिल जाते हैं। इस कार्य में तो प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे का गुरु है।

कोई कुछ भी कहे पर यह एक तथ्य है कि कोई भी कभी भी भूखा नहीं सोता है, कहीं न कहीं से, किसी भी तरह, किसी भी कीमत पर, किन्हीं भी हालातों में प्रत्येक व्यक्ति अपने लिये भोजन

जुटा ही लेता है। न्यायपूर्ण तरीके से नहीं तो अन्यायपूर्ण तरीके से, किसी की जान लेकर भी, और तो और स्वयं अपनी जान खतरे में डालकर भी। फिर बंधु-बांधव, परिजन, मित्र, परोपकारी करुणावंत लोग, समाज और सरकार तो हैं ही सहायता करने के लिये।

उक्त तथ्य मात्र भोजन के लिये ही नहीं वरन् मानव सुलभ हर प्रकार की आवश्यकताओं के लिये सही है, फिर चाहे वस्त्र हों, आवास हो, शिक्षा और स्वास्थ्य हो या मनोरंजन ही क्यों न हो, इस दुनिया में यह सब साधन सुलभ कराने वाली अनेकों एजेंसियाँ हैं, **यदि कुछ दुर्लभ है तो बस ''एक जथारथ ज्ञान''।**

ऐसे में यदि संसार त्यागी, विरागी, संयमी लोग भी उक्त भोगसामग्री जुटाने वाली भीड़भरी जमात में ही शामिल हो जायेंगे तो फिर इस जीव को कल्याणकारी सन्मार्ग पर लगने की प्रेरणा और उपदेश कौन देगा?

क्या कोई हितैषी पिता और ममतामयी माता अपने बालकों के लिये ऐसा भोजन, खिलौने या अन्य साधन जुटाते हैं जो बालकों को प्रिय तो होते हैं, तत्कालीन तौर पर प्रसन्न भी करते हैं, पर उनके स्वास्थ्य और अन्य हितों के प्रतिकूल हों, उनके जीवन के लिये खतरनाक हों? कोई भी विवेकी माता-पिता स्वत: तो ऐसा करेंगे ही नहीं पर क्या बालकों द्वारा मांगने पर, गिड़गिड़ाने और मिन्नतें करने पर, रोने-धोने और चीखपुकार करने पर या धमकाने पर भी ऐसा करेंगे? क्या उन्हें ऐसा करना भी चाहिये?

नहीं न!

तब संसार त्यागी संयमी लोग जो स्वयं भोगों को तुच्छ जानकर, स्वयं उन्हें त्यागने के बावजूद अन्य लोगों के लिये वही साधन और सामग्री उपलब्ध कराने के प्रयासों में लगे रहते हैं?

तथ्य तो यह है कि यदि यह जीवन आत्मकल्याण के साधन में न लगे तो व्यर्थ ही है, फिर चाहे ऐसे कटे या वैसे कटे। अनुकूल संयोगों और भरपूर भोगसामग्री के बीच कटे या प्रतिकूल संयोगों और अभावों के बीच। क्या फर्क पड़ेगा **''रहेगा तो संसार का संसार में ही'', संसार बढाने का ही उपक्रम करेगा।**

हमारी चर्चा का विषय तो यह है कि इसप्रकार यह जीव (हम सभी लोग) आत्महितकारी 'संयम' को कष्टकर ही मानते हैं, उसे आनंदमय एवं आनंदकारी नहीं मानते हैं; इसलिये उससे बचने का ही प्रयास करते हैं और मोक्ष के साधन से वंचित बने रहते हैं।

प्रश्न तो यह है कि प्रकटत: अभावग्रस्त एवं संसारीजनों की दृष्टि में दु:खस्वरूप सा दिखने वाला इस संयमित जीवन को आप (जिनवरदेव) आनंदमय क्यों कहते हैं, क्या यह सचमुच आनंदमय है? कैसे?

यह जानने के लिये पढिये इस शृंखला की अगली कड़ी।

(क्रमश:)

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय का

छठवाँ वार्षिक महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक

शुक्रवार, 23 फरवरी से रविवार, 25 फरवरी, 2018 तक

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में छठवाँ वार्षिक महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक का आयोजन शुक्रवार, 23 फरवरी से रविवार, 25 फरवरी, 2018 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित संपन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि विशिष्ट विद्वानों का प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं व गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इस मंगल महोत्सव में आप सभी सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित

सादर आमंत्रित हैं।

विशिष्ट आकर्षण

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन।
- आत्मार्थी विद्वानों के व्याख्यान एवं कक्षाओं का आयोजन।
- श्री टोडरमल महाविद्यालय के सत्र 2017-18 का विदाई एवं दीक्षांत समारोह।
- श्री नियमसार महामंडल विधान का आयोजन।
- जिनेन्द्र भक्ति संध्या।
- पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन।

निवेदन :- समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना रूपेन्द्र शास्त्री को उनके मोबाइल नं. 8233372891 पर या 0141-2705581, 2707458 पर अवश्य देवें।

मंगल अवसर *संस्कारों का बीजारोपण*

भव्य शुभारम्भ

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीवानगंज, भोपाल के तत्वावधान में

मध्यप्रदेश की राजधानी में भोपाल – विदिशा हाईवे पर

श्री 1008 शीतलनाथ भगवान के चार कल्याणकों की पवित्र भूमि पर नवनिर्मित

तीर्थधाम ज्ञानोदय की धरा पर मध्यप्रदेश का प्रथम शास्त्री महाविद्यालय का भव्य शुभारम्भ

श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय

दीवानगंज, भोपाल

आप सभी साधर्मीजनों को सूचित करते हुये हम अत्यंत हर्षित हैं कि आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के द्वारा वीतराग जिनधर्म के पुण्य प्रभावना के मंगल योग में भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश की राजधानी में भोपाल – विदिशा हाईव पर निकट नवनिर्मित तीर्थधाम ज्ञानोदय के अंचल में इस वर्ष शास्त्री महाविद्यालय का मंगल शुभारम्भ होने जा रहा है। यह मध्यभारत का प्रथम शास्त्री महाविद्यालय होगा। यहाँ लौकिक अध्ययन के साथ मुख्य रूप जैन धर्म के मूल आधारभूत शास्त्रों के अध्ययन का विशेषज्ञ विद्वानों के मार्गदर्शन में सहज लाभ प्राप्त होगा। अत: आपसे निवेदन है कि अपने परिवार के, सम्बन्धियों अथवा नगर के दसवीं उत्तीर्ण छात्रों को इस नवीन विद्यालय में प्रवेश के लिये प्रेरित करें। छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल / शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, भोपाल में लौकिक अध्ययन कराया जायेगा। इस वर्ष **प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष (कक्षा ग्यारहवीं)** में प्रवेश दिया जायेगा।

- दसवीं उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश
- प्रवेश साक्षात्कार द्वारा
- जैन धर्म के संस्कारों और शिक्षा के साथ लौकिक अध्ययन की उत्तम सुविधा
- आवास और भोजन की नि:शुल्क सुविधा
- प्राकृतिक सुरम्य वातावरण के मध्य अध्ययन के अनुकूल वातावरण
- श्रेष्ठ विद्वानों का निरन्तर सान्निध्य और लाभ
- आधुनिक शिक्षा के लिये कम्प्यूटर आदि की शिक्षा
- शैक्षणिक गतिविधियों के साथ शारीरिक विकास हेतु खेलकूद की समुचित व्यवस्था
- धार्मिक शिक्षा के साथ कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में सरकारी उच्च पदों की शैक्षणिक तैयारी

प्रवेश शिविर आयोजन की तिथि : 20 जून से 30 जून 2018

प्रवेश फार्म भेजने की अंतिम तिथि : 30 अप्रेल 2018

● नियम एवं शर्तें लागू

विशेष जानकारी के लिये और प्रवेश हेतु संपर्क : 9406527501, 9819015707, 9993354533, 9425613096

Email : kund.kundkahanbhopal@gmail.com

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 756 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 122 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2018 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **सिद्धायतन-द्रोणगिरी में 20 मई से 6 जून, 2018 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल (प्राचार्य)

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 41 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 20 मई से 6 जून 2018 तक सिद्धायतन-द्रोणगिरी (म.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

- पण्डित शान्तिकुमार पाटील

फॉर्म मंगाने का पता : - पण्डित जिनकुमार शास्त्री (अधीक्षक) (8903201674) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; Email-ptstjaipur@yahoo.com

सिद्धायतन-द्रोणगिरी का पता एवं संपर्क सूत्र - तीर्थधाम सिद्धायतन, मु.पो.-द्रोणगिरी, ग्राम-सेंधपा, तह.-बड़ामलहरा, जिला-छतरपुर 471311 (म.प्र.); मुन्नालाल जैन (मंत्री) - 9406569839, पण्डित शुभम शास्त्री - 834938156, कार्यालय - 7389242836

आशा इंडिया की शाखा का गठन

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) : यहाँ ग्लैक्सी होटल में श्री अनिलकुमारजी गर्ग के नेतृत्व में आशा इण्डिया की शाखा का गठन किया गया।

इस अवसर पर आशा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राकेशजी जैन ने जीव दया व मानवसेवा के लिये समर्पित सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना से कार्यरत इस संगठन की जानकारी देते हुए बताया कि अध्यात्म, अहिंसा व शाहाकार के प्रचार-प्रसार हेतु इस शाखा का गठन किया जा रहा है। जिनके हृदय में प्राणीमात्र के प्रति करुणा का भाव हो तथा जो अहिंसा धर्म के पालन में विश्वास करते हों, वे किसी भी जाति अथवा सम्प्रदाय के हों, इस संगठन के सदस्य बन सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुणप्रकाशजी गुप्ता ने की। इस अवसर पर आशा के राष्ट्रीय संचालक श्री अखिलजी बंसल ने फोन पर नवगठित इकाई को मान्यता प्रदान करते हुए श्री अनिलजी गर्ग को अध्यक्ष व श्री ओंकारदत्त शर्मा को सचिव नियुक्त किया। **- अखिल बंसल**

तीर्थधाम आदीश्वरम् का वार्षिकोत्सव संपन्न

चंदेरी (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम आदीश्वरम् का पंचम वार्षिकोत्सव दिनांक 28 जनवरी को उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री शैलेन्द्रजी अलीगढ (अध्यक्ष-अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ) के ध्वजारोहण के साथ हुआ। शांति विधान के आयोजन के अतिरिक्त भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक अनेक श्रद्धालुओं द्वारा किया गया। तीर्थंकर ऋषभदेव सर्वोदय फाउंडेशन के ट्रस्टी श्री अजितजी बंसल के अतिरिक्त श्री अजयजी बंसल व श्री जयेन्द्रजी जैन 'निप्पू' ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अखिलजी बंसल ने आभार व्यक्त किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सतीशजी जैन पिपरई द्वारा हुये। **- अखिल बंसल**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

23 से 25 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 फर.से 2 मार्च	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)
3 से 5 मार्च	इन्दौर (ढाईद्वीप)	प्रवचनसार मंडल विधान
15 से 20 अप्रैल	मकरोनिया-सागर	पंचकल्याणक

तीर्थयात्रा एवं धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : दिनांक 27 व 28 जनवरी को श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर स्वाध्याय ग्रुप जयपुर द्वारा लघु तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बसवा, झांझीरामपुरा, मथुरा-चौरासी, मंगलायतन-अलीगढ आदि स्थानों के जिनमंदिरों में दर्शन-भक्ति-पूजन-स्वाध्याय आदि कार्यक्रम हुये।

इस प्रसंग पर दिनांक 27 फरवरी को सायंकाल श्रमण ज्ञान भारती, मथुरा-चौरासी में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का सारगर्भित प्रवचन हुआ, जिसे यात्रा संघ के अतिरिक्त श्रमण ज्ञान भारती छात्रावास के शताधिक छात्रों ने सुना। क्षेत्र के प्रमुख श्री विजयजी टोंग्या (सेठजी) व ट्रस्टी श्री पी.सी. छाबड़ाजी व प्राचार्य जिनेन्द्रजी शास्त्री का भी उद्बोधन हुआ।

श्रमण ज्ञान भारती में प्रवचन करते हुए डॉ. संजीवजी गोधा

दिनांक 28 फरवरी को मंगलायतन में भी डॉ. गोधा के प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचनोपरांत श्री संजीवजी उस्मानपुर-दिल्ली द्वारा भजन व श्री पवनजी जैन एवं ब्र.हेमन्तभाई का उद्बोधन हुआ। संघ की ओर से गोधाजी ने श्री पवनजी जैन के स्वाध्याय, संयमित जीवन की अनुमोदना करते हुए उनके स्वास्थ्य व दीर्घायु की भावना व्यक्त की।

दो दिवसीय यात्रा में बस में माइक द्वारा निरंतर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं का संचालन हुआ।

आयोजन को सफल बनाने में सर्वश्री ओमजी जैन, पी.सी. छाबड़ा, अभयजी लुहाड़िया, अजयजी गोधा, विजयजी सौगानी एवं नीरजजी सेठी का सक्रिय सहयोग रहा।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com